International Journal for Multidisciplinary Research
International Conference on Multidisciplinary Research & Studies 2023
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com
ICMRS'23

संगीत में आए बदलाव तथा पुनर्रचना

डॉ. मोनाली मसीह

असिस्टंट प्रोफेसर, संगीत विभाग, दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय, जरीपटका, नागपुर (महाराश्ट्र)

जो कुछ षाष्वत है वह परंपराओं की नींव है। जो सहस्त्रों वर्शों से टिकी हुई है। जो भी नया होता है वह उसी ''षाष्वत'' की नींव पर ही आधारित होता है। और भारतीय षास्त्रीय संगीत की नींव आध्यात्म है इसीलिये वह षाष्वत है और आज तक टिकी है। पुनर्रचना एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो सहज कार्यरत रहती है। कोई भी महान कलाकार उसकी अनूठी प्रतिभां, उसकी सृजनषीलता, उसकी कलाभिव्यक्ति में नवीनता और उसकी प्रभावषीलता से जाना जाता है, माना जाता है। किसी भी बड़े कलाकार में एक और बहुत बड़ी बात होती है – वह है दैवीय प्रेरणा ;क्पअपदम प्देचपतंजपवदद्ध कोई कवि हो, चित्रकार हो, लेखक हो, संगीत रचनाकार हो – कहाँ से उसके पास विचार आते है, उसके कल्पना पटल पर क्या–क्या कैसे चित्रित हो जाता है और वह क्या–क्या निर्मित कर जाता है – विचार करे तो निष्चित रूप से अद्भुत लगता है। अतएव यदि भारतीय षास्त्रीय संगीत में पुनर्रचना किसी साधारण कलाकार के बस की बात नहीं। एक अपार प्रतिभा का धनी, असीम कल्पनाषक्ति एवं सृजनषीलता से ओतप्रोत और देवीय प्रेरणा ऐसा कलाकार, संगीतकार ही पुनर्रचना की प्रक्रिया को साकार कर सकता है।

ऐसी अनेक पारंपारिक रचनाएँ है जो बड़े कलाकारों ने अपने–अपने ढंग से प्रस्तुत की हैं। इन प्रस्तुतियों में मूलभूत अस्मिता प्कमदजपजल बरकरार है, साथ ही नयापन है, सृजनषीलता है, कल्पनाषक्ति की उड़ान है ओर यही कारण है कि वह सबके लिये ग्राहय ;बबमचजंइसमद्ध है और असीम आनंद की अनुभूति है, कहीं पर भी खटकने वाली बात नहीं है। दूसरी बात यह भी है कि यद्यपि भारतीय षास्त्रीय संगीत में परंपराओं का बड़ी कड़ाई के साथ सम्मान किया जाता है परंतु अपनी संस्कृति से प्राप्त उदार दृश्टिकोण के कारण भी स्वतंत्रता के साथ प्रगति सोपान में आगे भी अग्रसर होता जाता है। यहाँ पर भारतीय षास्त्रीय संगीत पाष्चात्य षास्त्रीय संगीत से भिन्न दिखाई देता है। पाष्चात्य षास्त्रीय संगीत में पारंपारिक रचनाएँ ;बसेंपबेद्ध ज्यों के त्यों प्रस्तुत किये जाते हैं। बड़े संगीतकारों जैसे बिथोवन या ब्रेहम या मोझार्ट या बाक जैसे क्लासीकल संगीतकारों की बनाई गयी रचनाओं ;लउचीवदपमेद्ध के प्रस्तुतिकरण में कोई भी कलाकार बदल लाने की गुस्ताखी नहीं करता। किसी पिआनो पर कोई कलाकार जब कोई पारंपारिक रचना पेष करता है तो उसके सामने लिखित 'नोटेषन्स' होते हैं और वह उन्हें ही बजाता है परंतु भारतीय संगीतकार जब गाता है तो उसके आलाप या उसकी ताने इत्यादि एक सी नहीं रहती। कलाकार अपनी नई सोच, नई कल्पनाओं को अमल में लाते हैं और संगीत और भी अधिक संपन्नता एवं विविधता से प्लावित होता रहता है। उपरोक्त चर्चा के अलावा और भी कारण हैं जो कलाकार को पुनर्रचना के लिये प्रेरित करते हैं।

समय हमेषा समान नहीं रहता। सामाजिक परिस्थितियाँ बदलती हैं, जीवनषैली बदलती है, रहन–सहन बदलता है, लोगों की पसंद, रूझान में बदलाव आता है– कलाकार को भी व्यवहार पक्ष अपने समक्ष रखते हुए बदलाव लाना ही पडता है। कोई भी गायक अथवा संगीतकार स्वयं को अपने श्रोताओं को कैसे दुर्लक्ष कर सकता है और वह जो भी लोकप्रिय पारंपारिक क्लासिक्स होते हैं, उन्हें अपने ढंग से प्रस्तुत करता है और इसी स्थिति में पुनर्रचना की प्रक्रिया सक्रिय हो उठती है और कुछ हट कर तैयार हो जाता हैं। आधुनिक काल में विज्ञान की प्रगति एवं प्रभाव के कारण जीवनषैली ''भयानक'' रूप से प्रभावित हुई है। जीवन अत्यंत गतिषील हो गया है, इन्सान का जीना दौड़भाग में ही समाप्त हो रहा है। राजाओं के दरबार समाप्त, दरबारी गायक भी समाप्त, आरामी जिंदगी समाप्त, संगीत गाने सुनने के लिये वख्त भी समाप्त, कम समय में आप अच्छे से अच्छा प्रस्तुत करें यही अपेक्षा रहती है। विज्ञान के उपकरणों के कारण भी प्रस्तुतियाँ में परिवर्तन करना कलाकार के लिये आवष्यक हो गया। जब ग्रामाफोन रिकार्ड का जन्म हुआ तो सबसे पहले 78 स्पीड की रिकार्ड में गाने रिकार्ड किये जाने लगे अर्थात् 3 मिनिट में अपना गाना पूरा करिये। बहुत सी पारंपारिक चीजें 78 की रिकार्ड में है। फिर ैक्ए स्क तमबवतके आयीं, टेपरिकार्डर का आविश्कार हुआ गायक को गाने के लिये और भी लम्बा समय प्राप्त हुआ इसप्रकार समकालीन परिस्थितियाँ भी पुनर्रचना के लिये कारणीभूत रहीं।

बाहयसंगीत के प्रभाव से भी पुनर्रचना के लिये कलाकारों का अग्रसर होना पड़ा। आज जो थ्नेपवद संगीत है पाष्चात्य संगीत के प्रभाव की ही उपज है।

एक अत्यंत महत्वपूर्ण कारण – मनुश्य स्वभाव। अपनी अस्मिता प्कमदजपजल की ललक। क्या भारतीय षास्त्रीय संगीत के घराने इस ललक की अभिव्यक्ति नहीं। किराणा घराना, ग्वालियर घराना, आग्रा घराना, जयपुर घराना, भेंडी बाजार घराना या इंदौर घराना..... ये सब प्कमदजपजल के संइमसे बन गये है।

परंतु इन सबके बावजूद संगीत रचनाओं के मूलभूत आधारों, नींव को किसीने बदला नहीं उसी पर अपनी स्वयं की पुनर्रचना स्थापित की। कुछ विद्वानों के जो विचार रहें हैं पुनर्रचना के विशय में, उनका कहना था कि षास्त्रीय संगीत से अधिक फिल्मी संगीत में काफी परिवर्तन दिखाई देते हैं। अतीत में संगीतकारों की अपनी पहचान थी। गीत की धुनों से किसी फिल्म के पार्ष्वसंगीत से ही समझ में आ जाता था कि संगीतकार कौन है या धुन या फिर यह संगीत किस संगीतकार की रचना हो सकती है। आज यह बात नही है। सबकी जलसम एक जैसी है। एक ही ढर्रे में संगीत का आकार दिखाई देता है। व्यक्तिगत पहचान समाप्त जैसी हो गई दिखती है।

दूसरा परिवर्तन षास्त्रीय संगीत का उपयोग भी फिल्मों में अधिक प्रमाण में किया जा रहा है और वह भी अपने–अपने ढंग से। उदाहरणार्थ – फिल्मों में हजारो गाने है जो रागों के आधार लेकर बनाएं गए है। परंतु अधिकांष गानों की धुने एक ही राग को लेकर षुध्दता से नही चलती। कोई गाने का आधार अथवा चलन एक प्रमुख राग अवष्य रहती है परंतु उनमें दूसरी रागों के स्वर अथवा अन्य स्वर जो उस विषिश्ट राग में नहीं हैं, उपयोग में लाए जाते हैं।

जैसे– कुहू कुहू बोले कोयलिया,
केतकी गुलाब जुही चंपक बन फुले।

ध्यान देनेवाली बात यह है कि षास्त्रीय संगीत अभ्यास रियाज साधना तपस्या का क्षेत्र है। स्वरों का रियाज जैसे किन स्वरों पर जोर देना, कम ज्यादा करना, मीड़ निकालना, गले की फिरत, गमक इन सभी के लिए अभ्यास एक साधना की आवष्यकता होती है। फिल्मी संगीत एवं सुगम संगीत में रागों की षुद्धता को इतना प्राधान्य नही दिया जाता। पारंपरिक बंधनों की कठोरता में नरमाई आयी और यही कारण है कि घरानों की पहचान भी धुंधली सी होती जा रही है।

उपरोक्त कारणों के अलावा वैज्ञानिक उपकरणों अर्थात् साऊंड सिस्टम तथा पाष्चात्य प्रभावों के कारण भी गायन पध्दति में परिवर्तन आया है। आज `वनदक `लेजमउ के कारण जोर जोर से वजन देते हुए गाने का चलन समाप्त हुआ है। साथ ही भागती–दौडती जिंदगी में सक्षम का भी ध्यान रखना आवष्यक हो गया है। ''दो दो घंटे एक ही राग चल रही है'' यह आज संभव नही। बस आधे घंटे में राग की प्रस्तुती समाप्त करना, राग विस्तार अथवा आलाप को सीमित करना जरूरी हो गया है। राग विस्तार की अवधि तो बहुत कम हो गयी है। अतीत में गायक अपना समय लेता था। नजाकत अली और सलामत अली एक ही राग दो दो घंटे तक गाते रहते थे। वे भी गाते थे और श्रोता भी डट के बैठे सुनते रहते थे। किंतु आज समय कुछ अलग है। आज की दौडती भागती जिन्दगी में लोगों के पास वक्त ही नही है तो निष्चित ही कई परिवर्तन हुए है। देखा जाए तो बदलती परिस्थितियों में परिवर्तन आवष्यक भी है। परंतु बदलाव हो तो वो अच्छे के लिए हो तो बेहतर है अन्यथा संगीत का स्तर उसकी गरिमा ही नश्ट होगी।

वैदिक काल से आज तक की यात्रा में हिंदुस्थानी षास्त्रीय संगीत का वर्तमान में परिश्कृत रूप किस प्रकार से उभरकर आया है। हिंदुस्थानी षास्त्रीय संगीत अथवा भारतीय संगीत की बेजोड कहानी है। अपने मूलभूत अस्तित्व को सम्हालते हुए सामाजिक, सांस्कृतिक राजनैतिक परिवर्तनों के प्रभावो को अपने में समाहित करते हुए अपने में अपने मूलभूत अस्तित्व में और भी निखार लाना निष्चित ही एक अद्भूत बात है।

अतः यह बात स्पश्ट होती है कि परिस्थितियों एवं वातावरण के बदलाव के कारण भारतीय षास्त्रीय संगीत की प्रस्तुतियाँ परिश्कृत तो हुई है परंतु उसकी मूलभूत अस्मिता टिकी हुई है– उसकी षाष्वतता में कोई खलल नहीं। इति।

संदर्भ –

1. भारतीय संगीत की परंपरा – गोस्वामी, डॉ. हरिकिषन
2. भारतीय संगीत की षिक्षाप्रणाली एवं उसका वर्तमान स्तर – डॉ. मधुबाला सक्सेना
3. संगीत में घराना व्यवस्था का विवर्तन – डॉ. राकाकंठ मित्रा
4. प्दजमतदमज